Vol 6 Issue 6 Dec 2016
ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT Golden Research Thoughts

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

भारतीय नारी : अस्मिता और अधिकार

डॉ. ओघड लखमनभाई झाला
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.

प्रस्तावना –

भूमंडलीकरण के इस दौर में साहित्य के क्षेत्र में नारी विमर्श चिन्तन और अध्ययन का केन्द्रिय विषय बना हुआ है । वैसे भी भारतीय नारी की सामाजिक प्रस्थिति और समस्याओं का अध्ययन अपने आप में बड़ा जटिल विषय है । चूँ कि भारतीय परिवेश में समय के साथ नारियों की स्थिति मे ं काफी परिवर्त न आया है । हमारी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में नारी की पूजा माँ दुर्गा के रूप में हुई है । लेकिन समय के साथ पुरुष प्रधान समाज ने नारी को दुर्बल समझकर उनके अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप करके उसे घर की चार दीवारी में बन्द करके उसके कार्य क्षेत्र को सीमित कर दिया । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा की व्यापकता एवम् पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से नारी अपने अस्तित्व के लिए जागृत हुई । इसके साथ ही स्त्री मुक्ति संघर्ष शुरू हुआ ।

स्वातंत्रोत्तर भारतीय समाज में सरकारी और गैरसरकारी संगठनों तथा समाज सुधारकों के प्रयत्नों से आज नारियों की प्रस्थिति पुरुषों के समान है । आज भारतीय नारी को अपना जीवनसाथी चुनने का पूरा अधिकार है । अन्तर्जातीय विवाहों का प्रचलन बढ़ता जा रहा है । औद्योगीकरण के क्षेत्र में वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है और निरंतर आगे बढ़ रही है । इस परिवर्तन ने जहाँ स्त्री जाति को सोचने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है, वहीं पर नई समस्याओं ने जन्म भी लिया है । इसके साथ ही साहित्य के क्षेत्र में नारी विमर्श के रूप में स्त्री मुक्ति संघर्ष शुरू हुआ ।

नारी विमर्श नारी के अस्तित्व सम्पन्न होने की प्रक्रिया है । स्त्री विमर्श स्त्री जीवन से जुड़ी समस्याओं को खुलकर समाज के विस्तृत फलक पर रखता है और स्त्री के अधिकारों एवम् दायित्वों पर चिन्तन प्रस्तुत करके परिवार और समाज में स्त्री को सम्मानजनक भूमिका प्रदान करने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है । डॉ. शशिकला त्रिपाठी के शब्दों में – ''स्त्रीवाद या स्त्री विमर्श स्त्रियों के अस्तित्व संपन्न होने की प्रक्रिया है । स्त्री समाज में जितने खण्डों और उपखण्डों में बाँटी गई है, उस विभाजन के विरुद्ध एक समग्र पहचान शक्ति का बोध और सत्ता का रहस्य जानने की आकुलता है स्त्रीवाद ।''[1]

भारत देश में नारी विमर्श जनतांत्रिक अधिकारों के साथ जुड़ा हुआ है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्त्री ने देखा कि उसे कानूनी अधिकार मिला है । लेकिन भारत की पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था ही उसकी स्वतंत्रता के लिए बाधक है । इस प्रकार स्त्री मुक्ति संघर्ष के दो आयाम है – परिवार और समाज । आज की स्त्री का मुक्ति संघर्ष घर–परिवार से शुरू होता है, फिर समाज की रूढ़ि और परंपरा के खिलाफ विद्रोह करके अपना अस्तित्व गढ़ता है । प्रायः नारी विमर्श के संदर्भ में दो प्रकार की विचारधाराएँ दृष्टिगोचर होती है । भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरा गांधी के अनुसार ''जब तक महिलाएँ अपनी प्रतिभा और क्षमता का पूरा उपयोग नहीं करती, तब तक संपूर्ण मानव क्षमता का उपयोग नहीं हो पायेगा, न ही हम भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे ।''[2] नारी विमर्श को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद है । अनेक विद्वान भारतीय नारी विमर्श को पश्चिम से जोड़ते है । हालाँ कि यह गलत बात है । क्योंकि पश्चिमी नारीवाद में पुरुष को स्त्री स्वातंत्र का शत्रु माना गया है । जब कि भारतीय नारी विमर्श में पुरुष को सम्मान दे ते हुए पुरुष प्रधान समाज की परंपरा के खिलाफ ही विद्रोह किया गया है । पत्नीत्व और मातृत्व का निर्णय और जिम्मेदारी भारतीय नारी विमर्श स्वैच्छिक स्वीकारता है ।

स्त्री–मुक्ति का अर्थ है कि स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व होना । स्त्री–पुरुष के बीच घटने वाले संबंधों को नकारा नहीं जा सकता । भारतीय नारी विमर्श पुरुष के व्यक्तित्व को महत्वपूर्ण मानता है । लेकिन वह किसी भी क्षेत्र में पुरुष के आधिपत्य को स्वीकारने के लिए राजी नहीं है । इस बारे में डॉ. रमणिका गुप्त लिखती है – ''हमारा इरादा औरतों को पुरुषों का दुश्मन बनाना हरगिज नहीं है, लेकिन हम पुरुष को औरत का मालिक बनने भी नहीं दे सकते । न ही औरत को पुरुष की दासी बनने देना चाहते हैं । दोनों एक दूसरे के साथी बनकर रहे, साझा जिन्दगी चलाये, हिस्सेदार और सलाहकार बनकर । पूरक भी बन सकते हैं, पर आश्रित नहीं ।''[3]

हिन्दी साहित्य में विशेष रूप से स्वातंत्रोत्तर महिला उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह प्रकट करते हुए नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को स्वर प्रदान किया है । स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कथा साहित्य में मन्नू भंडारी, सूर्य बाला, शिवानी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डे, मालती जोशी, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा आदि महिला लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य में स्त्री पात्र के माध्यम से स्वातंत्रोत्तर भारतीय समाज में नारी जागृति का संचार किया है । नारी विमर्ष की दृष्टि से मृदुला गर्ग कृत 'कठ गुलाब' उल्लेखनीय कृति है । उपन्यास की सभी स्त्रियाँ घरेलू हिंसा का शिकार है । उपन्यास की स्मिता, नर्मदा, मारियाना, नमिता, असीमा आदि स्त्री पात्र पुरुष से पीड़ित है । स्मिता का पति इतना पिटता है कि उसका गर्भ पात हो जाता है । मारियाना प्रथम पति दर्विंग से पीड़ित होकर दूसरी शादी करती है, लेकिन दूसरा पति भी खुदगर्ज निकलता है । नमिता का वैवाहिक जीवन भी घोर वैमनस्य और घृणा

में प्रतिकमित होता है । परिणाम स्वरूप सभी स्त्रियाँ विवाह संस्था का विरोध करती है । इस उपन्यास की तरह मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' उपन्यास में भी अजय से तंग आकर शकुन तलाक की राह पकड़ती है । ''दस वर्ष का विवाहित जीवन एक अंधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था । तलाक से मिली मुक्ति से भी आगे प्रकाश नहीं ।''[4]

पति–पत्नी के अहम और व्यक्ति स्वातंत्र के लिए अजय को तलाक देने वाली शकुन नई चुनौतियों से धबराकर फिर डॉ. जोशी के रूप में एक नये कंधे की तलाश करती है । यहाँ पर पति–पत्नी के संघर्ष के बीच उपेक्षित रह जाता है एकलौता बेटा बंटी । मुस्लिम सभ्यता और संस्कृति से गहरी जानकारी रखने वाली महिला लेखिका नासिरा शर्मा 'ठीकरे की मँगनी' उपन्यास में स्त्री के विद्रोही रूप को प्रस्तुत करने के बाद समाधान के तौर पर स्त्री–पुरुष समानता को महत्व देती है । उपन्यास की नायिका महरुख मुस्लिम परंपरागत रीति–रिवाज का विरोध करती हुई रफ़त से निकाह पढ़ने से स्पष्ट इन्कार करती है । जब रफ़त उसे पूछता है कि तुम्हें मर्दो से नफरत क्यों हो गई है ? तब वह कहती है – ''औरत की जिन्दगी के सारे करीबी जजबात रिश्ते मर्द से ही होते हैं । बाप, भाई, शौहर, महबूब, बेटा जैसी अहमियत को नकार कर औरत कहाँ जायेंगी रफ़त भाई ?''[5]

पिता, पति और पुत्र के अधीनस्थ रहने वाली स्त्री जाति को अकेले देखने की मानसिकता भारतीय समाज की नहीं रही । चाहे वह हिन्दू समाज हो या मुस्लिम । पुरुषप्रधान समाज में लीक से हटने वाली औरत को आत्महत्या करने के लिए विवश किया जाता है । मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' उपन्यास की नायिका मन्दा को कै लास मास्टर अपनी हवस का शिकार बनाता है । इस घटना से मन्दा शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से टूट जाती है ।

नारी सृष्टि की शिल्पकार है । जगत की निर्माण शक्ति उसके पास संरक्षित है । मातृत्व स्त्री जाति की चरम परीणिति है । स्वतंत्र अस्तित्व के संघर्ष के दौरान मातृत्व बाधक भी बन सकता है । लेकिन मातृत्व के प्रति स्त्री का पारंपरिक मोह हमेशा बना रहता है । प्रत्येक युग में पुरुष समाज ने स्त्री के मातृत्व की ही वंदना की है । राष्ट्र कवि दिनकर जी लिखते हैं – ''नारी ही वह महासेतु, जिस पर अदृश्य से चल कर नये मनुज, नवप्राण दृष्य जग में आते रहते हैं ।''[6]

दृश्य जगत को अदृश्य जगत से जोड़ने वाली जननी के प्रति दिनकर जी का दृष्टिकोण सात्विक और उदार मानवतावादी है । स्त्री–पुरुष समानता की मंगल कामना करते हुए उन्होंने 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखा है कि ''नर–नारी के संबंधों पर जैसा निश्चित निदान गाँधीजी और मार्कस् ने दिया है, वैसा और कोई विचारक नहीं दे सका । ये दोनों नेता नर–नारी को सहज एवम् समान दृष्टि से देखते हैं और यह जानते हैं कि जिस क्षेत्र में एक की विजय है, उसमें दूसरे को भी विजय मिल सकती है । खेत और कल–कारखाने ये दोनों के क्षेत्र हैं । ज्ञान और विज्ञान इन पर भी दोनों का अधिकार है । प्रकृति ने नर और नारी की रचना एक ही तत्त्व से की है । अतएव एक के लिए जो सहज और सम्भाव्य है वह दूसरे के लिए भी असंभव नहीं हो सकता । हाँ, मातृत्व एक ऐसा गुण अवश्य है, जिसके कारण नारी नर से भी श्रेष्ठ हो जाती है ।''[7]

सामान्यतः स्त्री विमर्शकारों की यह धारणा है कि स्त्रियों द्वारा स्त्रियों को विषय बनाकर स्त्री दृष्टि से लिखा गया साहित्य ही स्त्री–विमर्श है । लेकिन यह बात उचित नहीं है । क्योंकि वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे भारत वर्ष में ऐसे अनगिनत महापुरुष हो गये जिन्हों ने नारी को पुरुष से भी श्रेष्ठ घोषित किया है । यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि गाँधीजी, श्री अरविंद, विवेकानंदजी, विनोबा भावे आदि ने ऐसे अनेक आश्रमों की स्थापना की है, जहाँ पर आज भी स्त्री–पुरुष समान रूप से रहते हैं । ऐसे आश्रम आज तक स्त्रियों ने नहीं खोले । यह समाज की यथार्थता है । यह निर्विवाद सत्य है कि मानवीय गुणों का विकास पुरुष की अपेक्षा स्त्री में अधिक सहजता और सफलता से होता है । समाज और राष्ट्र के उत्थान में स्त्री की भूमिका महत्वपूर्ण रही है । गाँधीजी ने स्वराज आंदोलन में अहिंसा रूपि शस्त्र को स्त्री शक्ति के द्वारा ही समाज के सम्मुख रखकर स्वाधीनता प्राप्त की थी । विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के कार्यो में स्त्रियाँ पुरुषों से दो कदम आगे थी । विनोबाजी ने लिखा है कि – ''मेरे सामने प्रश्न आया आखिर सामाजिक क्रान्ति कौन करेगा ? तब मुझे यही लगा कि पुरुषों से दो कदम आगे बढ़कर यह कार्य स्त्रियाँ कर सकती है ।''[8]

भारतीय नारी विमर्श की एक बड़ी समस्या यह है कि वह आपसी गुटबंदी का शिकार है । नारी विमर्श में एकसूत्रता न होने से स्त्री की संघर्ष शक्ति बिखर गई है । शिक्षा के प्रचार–प्रसार के बावजूद नारी विमर्श शहरी मध्यमवर्गीय स्त्रियों तक सीमित है । उच्चवर्ग और निम्नवर्ग की स्त्रियों को जोड़ने में ज्यादा सफलता नहीं मिली ।

इसके अलावा नारीवाद की बुनियादी समस्या यह है कि वह अवधारणात्मक स्तर पर बहुत स्पष्ट नहीं है और क्रियात्मक स्तर पर भी काफी बिखरा हुआ है । इसलिए यह आवश्यक है कि भारतीय स्त्री ऐतिहासिक संघर्षो से जुड़े और प्रेरणा लें । क्योंकि समकालीन नारी विमर्श भारतीय नारी के ऐतिहासिक संघर्षो से न तो ठीक से परिचित है और न ही उससे जुड़ा है । निष्कर्ष के रूप में हम देखते हैं कि आज बदलते परिवेश में स्त्रियों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में काफी सुधार दिखाई दे रहा है । आज की शिक्षित स्त्री पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर उसका पारिवारिक सहयोग करती है । साथ ही अपनी पारिवारिक भूमिका बखूबी निभा रही है । आज बदलते परिवेश में पुरुष की वर्चस्ववादी मानसिकता में भी बदलाव आ रहा है । स्त्री की शिक्षा और स्वाधीनता पर विशेष बल दिया जा रहा है । स्त्री पुरुष दोनों साथ मिलकर कर्तव्य के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं । स्त्री स्वातंत्र के लिए आज पुरुष और स्त्री दोनों प्रयत्नशील है । आज विश्व के विराट फलक पर भारतीय नारी अपनी विशिष्ट पहचान बनाती हुई दृष्टिगोचर हो रही है ।

संदर्भ :

1उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री, डॉ. शशिकला त्रिपाठी
2भारतीय नारी : अस्मिता और अधिकार
3युद्धरत आम आदमी, अंक–99, जुलाई –सितम्बर 2009
4आपका बंटी, मन्नू भंडारी
5ठीकरे की मँगनी, नासिरा शर्मा
6उर्वशी, दिनकर
7संस्कृति के चार अध्याय, दिनकर
8आचार्य विनोबा की साहित्यिक दृष्टि, डॉ. सुमन जैन

डॉ. ओघड लखमनभाई झाला
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org